17 अक्टूबर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शांति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 14 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

गोम्मटेश्वर भगवान श्री बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव-2018 के अवसर पर -

राष्ट्रीय जैन विद्वत्सम्मेलन संपन्न

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : यहाँ गोम्मटेश्वर भगवान श्री बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति-2018 के तत्त्वावधान में एवं कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जैन विद्वत्सम्मेलन दिनांक 1 से 5 अक्टूबर तक सानन्द संपन्न हुआ।

विद्वत्सम्मेलन के संपूर्ण कार्यक्रम श्री अशोकजी बड़जात्या की अध्यक्षता में संपन्न हुये। मुख्य संयोजक श्री नवीनजी जैन गाजियाबाद एवं संयोजक श्री सुरेन्द्रजी जैन बाकलीवाल थे। अ.भा. शास्त्री परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमारजी जैन बड़ौत की सर्वाध्यक्षता में आयोजित इस विद्वत्सम्मेलन में दिगम्बर जैन समाज की विविध विचारधाराओं व मान्यताओं के अर्धशताधिक विद्वत्गण सम्मिलित हुये।

विद्वत्समागम - इस अवसर पर अ.भा.दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल के अतिरिक्त टोडरमल स्नातक परिषद के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ.अनेकान्तजी जैन दिल्ली, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. शीतलचंदजी जैन जयपुर, डॉ. जयकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. नलिन के. शास्त्री बोधगया, ब्र.जयकुमारजी जैन 'निशांत' टीकमगढ, डॉ. अनुपमजी जैन इन्दौर, डॉ. प्रेमसुमनजी जैन उदयपुर, डॉ. कमलेशजी जैन वाराणसी, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, श्री अखिलजी बंसल जयपुर, प्रो. अरुणजी जैन सांगानेर, डॉ. ऋषभजी जैन फौजदार वैशाली, पण्डित शिवचरण लाल जैन मैनपुरी, डॉ. फूलचंद जैन प्रेमी वाराणसी, डॉ. नीलमजी जैन पुणे, डॉ. नरेन्द्रजी जैन गाजियाबाद, ब्र. प्रदीप पीयूष जबलपुर आदि विद्वत्गण उपस्थित थे।

इस अवसर पर देश के विभिन्न विद्वत्परिषद् के सदस्यों के साथ पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् के 50 शास्त्री विद्वानों को विशेषरूप से आमंत्रित किया गया था।

विद्वत् संस्थाओं का समागम - सम्मेलन में 29 सत्रों में 157 विद्वानों के आलेख वाचन और चर्चा हुई। इस सम्मेलन में अ.भा.दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद्, विद्वत्परिषद्, विद्वत् शास्त्री परिषद् संस्थान, टोडरमल स्नातक परिषद्, तीर्थंकर ऋषभदेव विद्वत् महासंघ, प्रभावना जनकल्याण परिषद्, कर्नाटक दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद् सहित देशभर की विद्वत् संस्थाओं के कुल 578 विद्वान एवं उनके परिजन सहित 1600 साधर्मीजन उपस्थित थे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। उद्घाटन सत्र में **पूर्व प्रधानमंत्री माननीय एच.डी. देवेगौड़ा** सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

अभूतपूर्व जिनेन्द्र शोभायात्रा - दिनांक 1 अक्टूबर को जिनेन्द्र अभिषेक के पश्चात् शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सभी विद्वत्गण जिनेन्द्र भगवान का गुणानुवाद करते हुए नृत्य-गान कर रहे थे। सभी विद्वत्गणों को मालवी पगड़ी, टोडरमल अंगरखा और सुनहरी बॉर्डर की धोती प्रदानकर सम्मानित किया गया।

दुर्लभ ग्रंथों की प्रदर्शनी - सम्मेलन में प्राचीन आचार्य व सैंकड़ों विद्वानों के जीवन वृत्तांतों की पोस्टर प्रदर्शनी, इन्दौर के विविध मंदिरों एवं श्री तेरापंथी बड़ा मंदिर जयपुर से प्राप्त कुल 185 दुर्लभ ग्रंथों की मूल पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी तथा सैंकड़ों नवीन ग्रंथों की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

स्नातक परिषद का सम्मेलन - दिनांक 2 अक्टूबर को स्नातक परिषद का अनौपचारिक सम्मेलन डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल के मार्गदर्शन में एवं दिनांक 4 अक्टूबर को स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्तिजी, सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमारजी बड़ौत, संयोजन समिति अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या व देश के अन्य विशिष्ट विद्वानों के साथ स्नातक परिषद के सदस्यों का विशेष संवाद भी संपन्न हुआ।

समापन समारोह में कर्नाटक के मंत्री श्री ए. मंजू सहित सभी विद्वत्गण उपस्थित थे।

विद्वानों को भेंट - दि.जैन महासमिति के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रेष्ठी श्री नवीनजी जैन गाजियाबाद द्वारा प्रत्येक आमंत्रित विद्वान को एक टैबलेट, जिसमें 50 आगम ग्रंथों का संकलन है, भेंट किया गया। नवीनजी के इस कार्य की सभी विद्वानों ने प्रशंसा की।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा भी 13 पुस्तकों का सेट सभी विद्वानों को भेंट किया गया।

राष्ट्रीय जैन विद्वत्सम्मेलन को विश्वस्तरीय बनाने का प्रयास महासमिति द्वारा किया गया। सम्मेलन की श्रेष्ठ व्यवस्था हेतु दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोकजी बड़जात्या, श्री सुरेन्द्रजी बाकलीवाल, श्री डी.के. जैन, श्री प्रवीणजी पाटनी, श्री जैनेशजी झांझरी, श्री अनिलजी जैनको, श्री वीरेन्द्रजी बड़जात्या, श्री महावीरजी बैनाड़ा, श्री मनोजजी पाटोदी, श्री दीपकजी पाटनी, श्री जैनेन्द्रजी सेठी, श्री विपिनजी गंगवाल, श्री परागजी जैन, श्री प्रतिषजी जैन, संगीता पारस विनायका सहित सभी 71 युगल सदस्यों को सम्मानित किया गया। •

सम्पादकीय -

संस्कारों का महत्व

- पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रो. ज्ञान के पिताजी भी एक आदर्श अध्यापक और सच्चे धर्मात्मा पुरुष थे। उनका आदर्श जीवन हम सबके लिये अनुकरणीय है। वे मेरे भी प्रारम्भिक शिक्षा गुरु रहे थे, मैं उन्हें परोक्ष प्रणाम करता हूँ।

मि. सुदर्शन के सहयोग की तो कोई होड़ ही नहीं है। उनकी दैनिकचर्या अपने लिए अद्वितीय और अनुकरणीय है। इतने बड़े एडवोकेट होने पर भी अपने व्यस्त जीवन में से समय निकालकर धर्म और समाज के लिए सदा समर्पित रहते हैं, एतदर्थ मैं आप सबको धन्यवाद देता हूँ और सबके दीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूँ।''

उपस्थित जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए डॉ. धर्मचन्द ने कहा ''मैं इस समय अधिक कुछ न कहकर आप सबसे भी यही अपील करना चाहता हूँ कि आप लोग भी इस संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेकर सदैव लाभ लेते रहें; क्योंकि जीवन में केवल यही एकमात्र करने योग्य कार्य है।

मेरा संगठन और संगठन के सभी कार्यकर्ताओं के लिए यही मंगल आशीर्वाद है कि आप सब प्रगति के पथ पर आगे बढते हुए आत्मोन्नति के चरम लक्ष्य को प्राप्त करें।

मैं अपनी ओर से अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में आपके इस संगठन के ध्रुवफण्ड में एक लाख एक सौ एक रुपये देने की सहर्ष घोषणा करता हूँ तथा आपको वचन देता हूँ कि आगामी पाँच वर्ष तक आप जितने भी धार्मिक शिक्षण के विशेष आयोजन कर सकें, करें; उनका सम्पूर्ण खर्च मैं वहन करूँगा। मैं अपने पूज्य पिताजी द्वारा प्राप्त सारी सम्पत्ति का सदुपयोग तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में ही करना चाहता हूँ।

संजू ने भी अपने पिता स्व. सेठ सिद्धोमल की पुण्य स्मृति में एक लाख एक सौ एक रुपया देने की घोषणा की। सभा में उपस्थित अन्य धर्मप्रेमी बन्धुओं ने भी संगठन को अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार दिल खोलकर दान दिया।

सम्पूर्ण सभा ने संजू के संघर्षशील जीवन तथा धार्मिक भावनाओं का और डॉ. धर्मचन्द की पवित्र भावनाओं और उदार सहयोग का करतल ध्वनि से स्वागत किया।

अन्त में सुदर्शन ने संगठन की ओर से सब सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करके धन्यवाद देते हुए सर्वप्रथम उपवन में विराजमान साधु संघ को परोक्ष रूप से साधुवाद दिया और कहा कि ''हमारे सौभाग्य से इस वर्ष हमें आचार्य संघ के चातुर्मास से जो प्रवचन सुनने का अपूर्व और अद्भुत लाभ मिला, उसे व्यक्त करने के लिए हमारे पास ऐसे शब्द ही नहीं हैं, जिनके द्वारा हम उनके प्रति अपने हृदय के भक्तिभावों को व्यक्त कर सकें। उनके प्रति हमारा शत्-शत् नमन है।

डॉ. धर्मचन्द, प्रो. ज्ञान, उद्योगपति विज्ञान, प्रिय मित्र संजू, राजू, श्रीमती विद्या, सरला, सुनीता एवं सभी सदस्यों एवं सहधर्मी सज्जनों ने हमारे संगठन को मजबूत बनाने और कार्यक्रमों को सफल बनाने में जो प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग दिया है, उसके लिए मैं संगठन की ओर से उन सबका आभार मानता हूँ और धन्यवाद देता हूँ। तथा आशा और अपेक्षा करता हूँ कि आप सबका इसीप्रकार का स्नेह व सहयोग बना रहेगा। जयजिनेन्द्र। ●

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 अक्टूबर को महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 'तीन लोक' विषय पर गोष्ठी संपन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड ने की।

श्रेष्ठ वक्ताओं में संयम जैन खनियांधाना (उपाध्याय कनिष्ठ) और वैभव जैन आरोन (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का संचालन समकित जैन व मधुर जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। निर्णायक व आभार प्रदर्शक के रूप में जिनकुमारजी शास्त्री उपस्थित थे।

दिनांक 8 अक्टूबर को 'सम्यग्दर्शन' विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अरुणजी शास्त्री बण्ड ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सम्यक् सिंघई खनियांधाना (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं वैभव जैन ग्वालियर (शास्त्री प्रथम वर्ष) रहे। निर्णायक के रूप में पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन वीकेश जैन व अंकुश जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने एवं आभार प्रदर्शन संयम जैन नागपुर ने किया।

खुशखबरी ! भव्य शुभारम्भ!!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

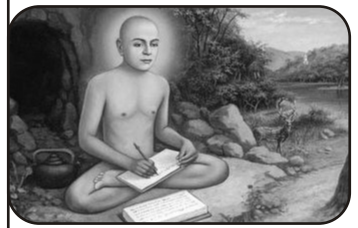
आचार्य समन्तभद्र

भव्य शुभारम्भ

(सोमवार, 2 अप्रैल 2018)

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष है कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा विगत 11 वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न है और 2008 से शास्त्री अध्ययन हेतु आचार्य धरसेन महाविद्यालय का संचालन कर रहा है, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ही लौकिक के साथ धार्मिक शिक्षण हेतु **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** का मंगल आरम्भ दिनांक 2 अप्रैल 2018 से हो रहा है, जिसमें 8वीं कक्षा से प्रवेश दिया जायेगा।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.सी. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं - तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट-बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 24 छात्रों को प्रवेश।

नोट :- प्रवेश फार्म 15 नवम्बर से उपलब्ध होंगे। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

श्री प्रेमचंद बजाज (अध्यक्ष) पण्डित रतन चौधरी (निदेशक) 8104597337

संपर्क सूत्र :- पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) 9785643203,
पण्डित सौरभ शास्त्री (अधीक्षक) 7891563353, पण्डित अभिनय शास्त्री (सह-अधीक्षक) 7737979912

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क
बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर–३०२०१५

१ जनवरी, २०१८ से ३१ दिसम्बर, २०१८ तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४४–२५४५ : विक्रम सं. २०७४–७५

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

मास →	पौष (१ से २ जनवरी)		माघ (३ जनवरी से ३१ जनवरी)				फाल्गुन (१ फरवरी से १ मार्च)			
पक्ष →	शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा			२	मं	१७ १८	बु गु	फरवरी १	गु	१६	शु
द्वितीया			३	बु	१९	शु	२	शु	१७	श
तृतीया			४	गु	२०	श	३	श	१८	र
चतुर्थी			५	शु	२१	र	४	र×	१९	सो
पंचमी			६	श	२२	सो	४	र	२०	मं
षष्ठी			७	र	२३	मं	५	सो	२१	बु
सप्तमी			८	सो	२४	बु	६	मं	२२	गु
अष्टमी			९	मं	२५	गु	७ ८	बु गु	२३*	शु
नवमी			१०	बु	२६	शु	९	शु	२४	श
दशमी			११	गु	२७	श	१०	श	२५	र
एकादशी			१२	शु	२८	र×	११	र	२६	सो
द्वादशी			१३	श	२८*	र	१२	सो	२७	मं
त्रयोदशी			१४	र	२९	सो	१३	मं	२८	बु
चतुर्दशी	जन.2018 १	सो	१५*	सो	३०	मं	१४	बु	मार्च १	गु×
पूर्णिमा/अमा.	२	मं×	१६	मं	३१	बु	१५	गु	१*	गु

मास →	चैत्र (२ मार्च से ३१ मार्च)				वैशाख (१ अप्रैल से २९ अप्रैल)				प्रथम ज्येष्ठ (३० अप्रैल से २९ मई)			
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	२	शु	१८	र	अप्रैल १	र	१६	सो	३०	सो	१६	बु
द्वितीया	३	श	१९	सो	२	सो	१७*	मं	मई १	मं	१७	गु
तृतीया	४	र	२०	मं	३	मं	१८*	बु	२ ३	बु गु	१८	शु×
चतुर्थी	५	सो	२१	बु	४	बु	१९	गु	४	शु	१८	शु
पंचमी	६	मं	२२	गु	५	गु	२०	शु	५	श	१९	श
षष्ठी	७	बु	२३	शु	६	शु	२१	श	६	र	२०	र
सप्तमी	८	गु	२४	श	७	श	२२	र	७	सो	२१	सो
अष्टमी	९	शु	२५	र×	८	र	२३	सो	८	मं	२२	मं
नवमी	१०*	श	२५	र	९	सो	२४	मं	९	बु	२३	बु
दशमी	११ १२	र सो	२६	सो	१०	मं	२५	बु	१०	गु	२४	गु
एकादशी	१३	मं	२७	मं	११ १२	बु गु	२६	गु	११	शु	२५	शु
द्वादशी	१४	बु	२८	बु	१३	शु	२७	शु×	१२	श	२६	श
त्रयोदशी	१५	गु	२९*	गु	१४	श	२७	शु	१३	र	२७	र
चतुर्दशी	१६	शु	३०	शु	१५	र	२८	श	१४	सो	२८	सो
पूर्णिमा/अमा.	१७	श	३१	श	१६	सो×	२९	र	१५	मं	२९	मं

मास →	द्वितीय ज्येष्ठ (३० मई से २८ जून)				आषाढ़ (२९ जून से २७ जुलाई)				श्रावण (२८ जुलाई से २६ अगस्त)			
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	३०	बु	१४	गु	२९	शु	१३	शु×	२८*	श	१२	र
द्वितीया	३१	गु	१५	शु	३०	श	१४	श	२९	र	१३	सो
तृतीया	जून १	शु	१६	श	जुलाई १	र	१५	र	३० ३१	सो मं	१३	सो×
चतुर्थी	२	श	१७	र	२	सो	१६	सो	अगस्त १	बु	१४	मं
पंचमी	३	र	१८*	सो	३	मं	१७	मं	२	गु	१५	बु
षष्ठी	४ ५	सो मं	१९	मं×	४	बु	१८	बु	३	शु	१६	गु
सप्तमी	६	बु	१९	मं	५	गु	१९	गु	४	श	१७*	शु
अष्टमी	७	गु	२०	बु	६	शु	२०*	शु	५	र	१८	श
नवमी	८	शु	२१	गु	७	श	२१	श	६	सो	१९	र
दशमी	९	श	२२	शु	८	र	२२	र	७	मं×	२०	सो
एकादशी	१०	र	२३	श	९	सो	२३	सो	७	मं	२१	मं
द्वादशी	११	सो	२४	र	१०	मं	२४	मं	८	बु	२२ २३	बु गु
त्रयोदशी	१२×	मं	२५	सो	११	बु	२५	बु	९	गु	२४	शु
चतुर्दशी	१२	मं	२६ २७	मं बु	१२	गु	२६	गु	१०	शु	२५	श
पूर्णिमा/अमा.	१३	बु	२८	गु	१३	शु	२७*	शु	११	श	२६*	र

मास →	भाद्रपद (२६ अगस्त से २४ सित.)				आश्विन (२५ सित. से २४ अक्टूबर)				कार्तिक (२५ अक्टू. से २३ नवम्बर)				मार्गशीर्ष (२४ नवम्बर से २२ दिसम्बर)				पौष (२३ से ३१ दिस.)	
पक्ष →	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण	
तिथि ↓	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	२७*	सो	१०	सो	२५ २६	मं बु	१०	बु×	२५	गु	८	गु	२४	श×	८	श	२३	र
द्वितीया	२८	मं	११	मं	२७	गु	१०	बु	२६	शु	९	शु	२४	श	९	र	२४	सो
तृतीया	२९	बु	१२	बु	२८×	शु	११	गु	२७	श	१०	श	२५	र	१०	सो	२५	मं
चतुर्थी	३०	गु	१३	गु	२८	शु	१२	शु	२८	र	११	र	२६	सो	११	मं	२६	बु
पंचमी	३१	शु	१४*	शु	२९	श	१३	श	२९	सो	१२	सो	२७	मं	१२	बु	२७	गु×
षष्ठी	सितम्बर १	श	१५	श	३०	र	१४ १५	र सो	३०	मं	१३	मं	२८	बु	१३	गु	२७	गु
सप्तमी	२	र	१६	र	अक्टूबर १	सो	१६	मं	३१	बु	१४ १५	बु गु	२९*	गु	१४	शु	२८	शु
अष्टमी	३	सो	१७	सो	२	मं	१७	बु	नवम्बर १	गु	१६*	शु	३०	शु	१५	श	२९	श
नवमी	४	मं	१८*	मं	३	बु	१८	गु	२	शु×	१७	श	दिसम्बर १	श	१६	र	३०	र
दशमी	५	बु	१९*	बु	४	गु	१९	शु	२	शु	१८	र	२	र	१७ १८	सो मं	३१	सो
एकादशी	६	गु	२०	गु	५	शु	२०	श	३	श	१९	सो	३	सो	१९	बु×		
द्वादशी	७	शु	२१	शु	६	श	२१	र	४	र	२०	मं	४	मं	१९	बु		
त्रयोदशी	७	शु×	२२*	श	७	र	२२	सो	५	सो	२१	बु	५	बु	२०	गु		
चतुर्दशी	८	श	२३*	र	८	सो	२३	मं	६	मं	२२	गु	६	गु	२१	शु		
पूर्णिमा/अमा.	९	र	२४*	सो	९	मं	२४	बु	७*	बु	२३*	शु	७	शु	२२	श		

× तिथि क्षय * जैनव्रत एवं पर्व

जैन व्रत एवं पर्व :

ऋषभदेव निर्वाण दिवस – १५ जनवरी, २०१८
कविवर बनारसीदास जयन्ती – २८ जनवरी, २०१८
श्री ऋषभदेव जयन्ती – १० मार्च, २०१८
अष्टान्हिका : (१) २३ फरवरी से १ मार्च, २०१८
(२) २० जुलाई से २७ जुलाई, २०१८
(३) १६ नवम्बर से २३ नवम्बर, २०१८

श्री महावीर भगवान जयन्ती – २९ मार्च, २०१८
श्री कानजीस्वामी जयन्ती – १७ अप्रैल, २०१८
अक्षय तृतीया – १८ अप्रैल, २०१८
श्रुत पंचमी – १८ जून, २०१८
वीर शासन जयन्ती – २८ जुलाई, २०१८
मो. सप्तमी (पार्श्व. निर्वाण) – १७ अगस्त, २०१८

रक्षा बन्धन – २६ अगस्त, २०१८
सोलहकारण व्रत – २७ अगस्त से २४ सितम्बर, २०१८
दशलक्षण व्रत – १४ सितम्बर से २३ सितम्बर, २०१८
पुष्पांजलि व्रत – १४ सितम्बर से १८ सितम्बर, २०१८
सुगन्ध दशमी – १९ सितम्बर, २०१८
रत्नत्रय व्रत – २२ सितम्बर से २४ सितम्बर, २०१८

अनन्त चतुर्दशी – २३ सितम्बर, २०१८
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) – ७ नवम्बर, २०१८
श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस – २९ नवम्बर, २०१८
जयपुर पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव – २३ से २५ फरवरी, २०१८

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर – २० मई से ६ जून, २०१८ तक, सिद्धायतन–द्रोणगिरि (म.प्र.)
महाविद्यालय शिविर – १२ अगस्त से २१ अगस्त, २०१८ तक, जयपुर
शिक्षण शिविर – १४ अक्टूबर से २१ अक्टूबर, २०१८ तक, जयपुर

प्रकाशचन्द जैन 'ज्योतिर्विद' मो. ९३५९९२३७७५
७३, लोहाई, मैनपुरी (उ.प्र.) के सौजन्य से, फोन : ०५६७२–२३४२२७

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (3)

यदि सुखी होना है तो हमें निर्णय करना होगा कि ''मैं कौन हूँ?''

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

गत अंक में हमने पढा कि हमें जिस क्षेत्र में आगे बढना है उस क्षेत्र की भाषा और शैली समझनी होगी, परिभाषाएं और उनके निहितार्थ जानने होंगे। यदि हम अपने वर्तमान भाषा ज्ञान से ही काम चलाना चाहेंगे तो हम गुमराह ही होंगे।

हमारी सबसे बड़ी भूल यह है कि हम अपनी वर्तमान सोच, भाषा, शैली और मानसिकता के बंदी बने रहकर ही दु:ख से छूटकर सुख पाना चाहते हैं, आत्मकल्याण करना चाहते हैं, यदि इन सबसे ही अपना कल्याण होना होता तो अब तक हो जाता न? इनसे तो जो हो सकता था, हो ही रहा है, इन्हीं के कारण तो हम संसार में भटक रहे हैं।

उक्ततथ्य को यदि हम अपने आप पर घटित करके देखें तो सब कुछ सहज ही स्पष्ट हो जायेगा। मान लीजिये कि यह एक तथ्य है कि–

''मैं दु:खी हूँ, मुझे सुखी होना है और सुखी होने का उपाय धर्म है।''

हमें यह विचार करना होगा कि उक्त वाक्य के संदर्भ में –

- **''मैं'' कौन हूँ?**
- **''दु:ख'' क्या है?**
- **''सुख'' क्या है?**
- **''धर्म'' क्या है?**

ऊपरी तौर पर देखने पर तो इन प्रश्नों के उत्तर बहुत सरल हैं। अरे! सरल और कठिन की तो बात तो बाद में होगी? पहले बात तो यह है कि हमें ऐसा प्रश्न कभी उठता ही नहीं है न!

उठे भी क्यों?

क्या हम इतना भी नहीं जानते हैं कि ''मैं कौन हूँ, दु:ख क्या है, सुख क्या है, धर्म क्या है?''

क्या हम दूध पीते बच्चे हैं, जिन्हें सिखाना पड़ता है कि उसका नाम क्या है, पता क्या है?

हाँ भाई! **यदि मोक्ष जाना है, सुखी होना है तो शुरुआत यहीं से करनी होगी। सब कुछ नये सिरे से सीखना और परिभाषित करना होगा।**

तुझे यदि दिल्ली जाना है तो ट्रेन का रिजर्वेशन कराने के लिये तेरा नाम ''कमल, विमल या निर्मल ..... '' तथा उम्र 40-50 या 60 वर्ष सही हो सकती है पर यदि तुझे मोक्ष जाना है तो न तो तेरा यह नाम सही है और न तेरी यह उम्र।

मोक्षार्थी का नाम तो ''भगवान आत्मा'' और उम्र अनादि-अनन्त हुआ करती है।

मोक्षार्थी न तो मनुष्य या पशु हुआ करता है और न ही बालक, वृद्ध या जवान।

जिसप्रकार दिल्ली जाने की चाह रखने वाले का ''कमल या विमल'' नाम सार्थक है, ''भगवानआत्मा'' नाम कार्यकारी नहीं है, उसी प्रकार मोक्षार्थी का सार्थक नाम ''भगवानआत्मा'' है, उसका नाम ''कमल या विमल'' सार्थक नहीं है, क्योंकि भगवान आत्मा अनादि-अनंत है और ''कमल या विमल'' नाम का अस्तित्व मात्र इस मानव जीवन तक ही सीमित है। मात्र एक जीवन को लक्ष्य में रखकर किये गये कार्य हमारे त्रिकाली प्रयोजन की सिद्धि नहीं कर सकते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि **''मैं'' की परिभाषा बदलते ही दु:ख और सुख की परिभाषाएं पूर्णरूप से बदल जाती हैं।**

''कमल, विमल या निर्मल'' की समस्या (दुखड़ा) भूख-प्यास, स्वास्थ्य-बीमारी, गरीबी-बेरोजगारी आदि हो सकती है; पर ये ''भगवान आत्मा'' के दुखड़े नहीं हैं। भगवान आत्मा की समस्या (दु:ख) तो भवभ्रमण है बस!

नौकरी मिलते ही या दाना-पानी मिलते ही कमल सुखी हो सकता है पर भगवान आत्मा नहीं। कमल के लिये भरे पेट और खाली पेट में अंतर हो सकता है पर भगवान आत्मा के लिये नहीं, क्योंकि भगवान आत्मा का पेट है ही नहीं, होता ही नहीं।

पेट खाली हो या भरा हो, भगवान आत्मा तो भवभ्रमण के कारण हर हाल में दुखी ही है, वह तो तब सुखी होगा जब उसका भवभ्रमण मिट जायेगा।

इसप्रकार हम देखते हैं कि **हम वही के वही रहते हुए भी हमारी ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही दु:ख और सुख की परिभाषा भी बदल जाती है, उनके कारण या उपाय बदल जाते हैं, हमारे क्रियाकलाप बदल जाते हैं।**

अब यह हमें तय करना है कि हमें कमल (वर्तमान) के दु:ख दूर करने हैं या भगवानआत्मा के; हमें कमल को सुखी करना है या भगवानआत्मा (त्रिकालीध्रुव) को; हमें संसार मिटाने का उपक्रम करना है या मात्र भूख मिटाने के प्रयासों में ही यह जीवन झोंक देना है।

एक उदाहरण से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जायेगी –

कल्पना कीजिये कि एक परिवार गरीबी और बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहा है और उनके पास आज के भोजन का भी बंदोबस्त नहीं है। बच्चे भूख से व्याकुल होकर क्रंदन कर रहे हैं।

मैं आपसे पूछता हूँ कि पिता और बच्चे एक ही परिवार के दो सदस्य हैं और एक समान परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं; पर क्या दोनों की समस्याएं समान हैं, दोनों का उपचार एक जैसा है?

नहीं!

न तो दोनों की समस्याएं एक जैसी हैं और न ही उपचार।

दोनों में बड़ा और मूलभूत अंतर है।

देखें, कैसे?

किसी तरह एक समय के भोजन का इंतजाम होते ही बच्चा भरपेट

खाना खाकर अपने दोस्तों के साथ खेलने के लिये दौड़ जाता है। अब वह निर्भार हो गया है, अब उसके सामने कोई समस्या नहीं।

उसे यह चिन्ता नहीं कि अभी तो भोजन मिल गया पर शाम को क्या होगा, क्योंकि वह तो बस वर्तमान में ही निमग्न है, उसे तो बस अभी का विचार है। अब उसकी परेशानी का कारण मात्र यह है कि खेलने के लिये कोई दोस्त या साथी नहीं मिल पा रहा है, क्योंकि वे सब तो पढने के लिये स्कूल गये हैं।

दूसरी ओर उसका पिता पेट भर जाने के बावजूद ज्यों का त्यों व्याकुल और उदास है; **क्योंकि उसके सामने चुनौती मात्र अभी का भोजन जुटाने की नहीं वरन जीवनभर के भोजन-वस्त्रादिक का इंतजाम करने की है।**

बाप और बेटे के व्यवहार में यह अंतर क्यों है, एक ही परिस्थिति में एक साथ रहते हुए दोनों की मानसिकता अलग-अलग क्यों है?

क्योंकि **बालक की दृष्टि मात्र वर्तमान पर है और पिता की वर्तमान के साथ-साथ भविष्य पर भी।** जहाँ बालक सिर्फ वर्तमान में जी रहा है, वहीं पिता हालांकि वर्तमान में भोजन का इंतजाम करने में व्यस्त दिखाई तो देता है पर उसका इंतजाम होते ही बच्चे की तरह निश्चिंत होकर गाफिल नहीं हो जाता है, बल्कि नौकरी ढूंढने के लिये निकल पड़ता है, क्योंकि उसकी मूल समस्या बेरोजगारी है, जॉब पाना है ताकि जीवनभर के लिये भोजन का इंतजाम हो सके।

बाप और बेटे के व्यवहार में यह अंतर इसलिये है कि दोनों की ''मैं'' की परिभाषा अलग-अलग है। बालक अपने आपको मात्र बालक मानता है, मात्र आज का बालक आने वाले कल से बेखबर है, उसे भविष्य का ज्ञान, चिंता और परवाह नहीं है, जबकि पिता अपने आपको एक मनुष्य मानता है। उसकी परिकल्पना है कि वह अभी 25-50 वर्ष और जीयेगा, इसलिये वह मात्र वर्तमान के इंतजाम को उतना महत्व नहीं देता है, जितना अपने सम्पूर्ण जीवन के इंतजाम को देता है। मात्र वर्तमान में जीने वाले बालक को प्रतिपल मनोरंजन चाहिये, इसलिये वह भोजन का आनंद लेने के बाद खेल के आनंद की तलाश में दौड़ पड़ता है कि कहीं एक पल भी मनोरंजन के बगैर व्यर्थ बर्बाद न हो जाये।

हम सभी लोग भी अपने आत्मा के मामले में बालकवत व्यवहार ही तो करते हैं। हमें आत्मा की अनादि-अनन्तता का न तो विचार है और न ही परवाह। बस इसीलिये हम आत्मा के अनंतकाल तक सुखी बने रहने की दिशा में कोई प्रयत्न ही नहीं करते हैं और उस अबोध बालक के समान मात्र अपने आज की खुशी के लिये इस मानव जीवन की खुशी और उत्थान के लिये अपने आपको झोंक देते हैं, समर्पित कर देते हैं।

क्यों?

क्योंकि हमने मात्र 100-50 वर्ष के इस मानव जीवन को ''मैं'' माना है, अनादि-अनन्त भगवान आत्मा को नहीं।

जिसप्रकार वह बालक भी जिस दिन थोड़ा परिपक्व होता है तो उसे अपने भविष्य का अहसास होने लगता है, वह अपने आपको एक बालक मात्र मानना छोड़कर एक मनुष्य मानने लगता है तो अब उसे सम्पूर्ण मानव जीवन की चिंता होने लगती है, भविष्य की चिंता सताने लगती है, अब वह अपने करियर की चिंता करने लगता है। अब वह खेलकूद और आज का मनोरंजन छोड़कर अपना भविष्य संवारने के लिये पढाई-लिखाई में जुट जाता है। उस बालक के व्यवहार में यह परिवर्तन क्यों और कैसे हुआ? मात्र ''मैं'' की परिभाषा बदल जाने से ही न!

यदि हम अपने आपको मात्र मनुष्य ही मानते रहेंगे तो इसका तात्पर्य है कि न तो हम इस जीवन से पहले थे और न ही इस जीवन के बाद रहेंगे तब भवभ्रमण का तो प्रश्न ही नहीं रहा! तब इसे मिटाने का उपाय कोई क्यों और कैसे करेगा?

यदि हम अपने आपको अनादि-अनन्त भगवान आत्मा मान लें तो भला अनंतकाल के अनन्त सुख की परवाह छोड़कर मात्र अपने वर्तमान की संभाल में ही जीवन झोंक डालने जैसा बालकवत अविवेकी कृत्य कैसे करते रह सकते हैं?

जिसके सामने अपने अनंतकाल तक सुखी बने रहने की चुनौती खड़ी हो भला उसके सामने मात्र आज की भूख-प्यास या कोई अन्य व्यथा क्या मायने रखती है? वह अनंतकाल का इंतजाम करे या मात्र आज में उलझा रहे?

इसप्रकार हम पाते हैं कि **किस प्रकार हमारी ''मैं'' की परिभाषा बदलते ही सबकुछ बदल जाता है।**

यदि हमें सुखी होना है, आत्मकल्याण करना है तो उक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें सबसे पहले ''मैं'' को परिभाषित करना होगा। ''मैं कौन हूँ'' यह जानना और पहिचानना होगा। (क्रमशः)

वैराग्य समाचार

(1) सेलू (महा.) निवासी श्री बबनराव हरिभाऊ विश्वंभर का 75 वर्ष की आयु में दिनांक 24 सितम्बर को गिरनार की वंदना के उत्कृष्ट परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री अनंतकुमार विश्वंभर के पिताजी थे।

(2) कोटा (राज.) निवासी श्री राजेन्द्रकुमारजी बज का दिनांक 7 अक्टूबर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रसिद्ध समाजसेवी एवं अनेक संस्थाओं से जुड़े हुये सक्रिय कार्यकर्ता थे।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा –

स्व. श्री भभूतमलजी भंडारी को हार्दिक श्रद्धांजलि

जयपुर (राज.) : यहाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर में दिनांक 17 सितम्बर को शिविर उद्‌घाटन के अवसर पर श्री भभूतमलजी भण्डारी, बैंगलोर के देहावसान पर श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने बताया कि कर्नाटक प्रांत में तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का पूरा श्रेय श्री भभूतमलजी भण्डारी को ही दिया जा सकता है; मूल रूप से श्वेताम्बर सम्प्रदाय में जन्म लेने पर भी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संपर्क में आकर दिगम्बर जैनधर्म अंगीकार किया एवं बैंगलोर में शहर के बीचोंबीच दिगम्बर जैन मन्दिर का पंचकल्याणक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। आप गहरे आत्मार्थी थे, तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे, आपकी ही भांति आपके पुत्र श्री चम्पालालजी भण्डारी एवं श्री रमेशजी भण्डारी भी तत्त्वप्रचार में पूरा सहयोग प्रदान करते हैं।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

"श्रुत"

श्रुत ही श्रुत का सार है,
श्रुत बिन बैन असार।
श्रुत विश्रुत होता रहा,
श्रुत से ही उद्धार।।
श्रुत- कुश्रुत में भेद है,
श्रुत से भेद-विज्ञान।
तत्त्वज्ञान ही सुश्रुत भाई,
तत्त्व विरोधी कुश्रुत जान।।
श्रुत अगम्य विस्तार है,
श्रुत आतम का सार।
श्रु से श्रुत होता नहीं,
बिनश्रुत ही संसार।।
बहुश्रुत से समकित नहीं,
बिनश्रुत भी न होय।
समकित श्रुत की पूर्णता,
श्रुत से अश्रुत होय।।
श्रुत ही से ना धर्म है,
श्रुत ही से ना मोक्ष।
श्रुत को श्रुत में धार लो,
सर्वश्रुतों का मर्म।।

– शुभांशु जैन, कोटा

डॉ. भारिल्ल ने किया विमोचन

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : यहाँ आयोजित राष्ट्रीय जैन विद्वत्सम्मेलन के अवसर पर दिनांक 2 अक्टूबर को श्री कानजीस्वामी अतिथि गृह में स्नातक परिषद् सम्मेलन के अवसर पर श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित ज्ञानार्णव अपर नाम योगप्रदीपाधिकार के कन्नड अनुवाद का विमोचन तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित महावीरजी पाटील सांगली, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई आदि 55 विद्वत्गण उपस्थित थे।

इस ग्रंथ का अनुवाद श्री बाहुबली भोसगे एवं प्रकाशन श्री महादेव कुरकुरे (दिगम्बर जैन स्याद्वाद ग्रंथमाला, धारवाड) ने किया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

16 से 20 अक्टू.2017	देवलाली	दीपावली
14 से 19 नव. 2017	झालरापाटन	पंचकल्याणक
24 से 28 नव. 2017	नागपुर	पंचकल्याणक
2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
12 से 16 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक

प्रकाशन तिथि : 13 अक्टूबर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com